

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता, सत्र 15, पॉल, इफिसियों, फिलिप्पियों और कुलुस्सियों में मसीह के साथ एकता के लिए आधार

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन की पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 15 है, पॉल, इफिसियों, फिलिप्पियों और कुलुस्सियों में मसीह के साथ एकता के लिए आधार।

हम इफिसियों 2, आयत 11 से 16 तक का हवाला देकर पॉल के पत्रों में मसीह के साथ एकता की अपनी जांच जारी रखते हैं।

पौलुस लिखता है, इसलिए स्मरण करो कि एक समय तुम जो शरीर के अनुसार अन्यजाति हो, और जिसे हाथ के द्वारा शरीर में किया जाने वाला खतना कहते हैं, उस समय मसीह से अलग और इस्राएल के राष्ट्र से अलग किए हुए और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और जगत में आशाहीन और परमेश्वर रहित थे। परन्तु अब मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लोहू के द्वारा निकट हो गए हो। क्योंकि वही हमारा मेल है, जिस ने हम दोनों को एक कर लिया और अपने शरीर में बैर की दीवार को तोड़ दिया, और विधियों की आज्ञाओं की व्यवस्था को मिटा दिया, ताकि उन दोनों के स्थान पर अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल कर सके, और क्रूस के द्वारा बैर को नाश करके हम दोनों को एक देह बनाकर परमेश्वर से मिला सके।

इस पाठ में पौलुस ने खोए हुए व्यक्ति की मसीह के साथ एकता की आवश्यकता का सबसे विस्तृत वर्णन किया है। अन्यजाति अविश्वासियों के मामले में उस आवश्यकता को रेखांकित किया गया है। पौलुस लिखता है कि आप उस समय मसीह से अलग हो गए थे, पद 12।

मसीह के साथ एकता की आवश्यकता उससे अलग होने की है। उसके पास अनंत जीवन और क्षमा है। जब तक हम उससे अलग हैं, हम उसके सभी बचत लाभों से भी अलग हैं।

अन्यजातियों के मामले में स्थिति और भी गंभीर हो जाती है क्योंकि वे भी इस्राएल के राष्ट्र से अलग-थलग हैं और प्रतिज्ञा की वाचाओं के प्रति अजनबी हैं, पद 12। परिणामस्वरूप, अन्यजाति अविश्वासी, सभी विश्वासियों के प्रतिनिधि के रूप में, कोई आशा नहीं रखते हैं और संसार में परमेश्वर के बिना हैं, पद 12। परन्तु परमेश्वर के अद्भुत अनुग्रह को धन्यवाद हो कि जब पौलुस के पाठक ऐसी कठिन परिस्थिति में थे, पद 13, परन्तु अब मसीह यीशु में तुम जो कभी दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट लाए गए हो।

यहाँ मसीह यीशु में सूक्ष्मता को समझना कठिन नहीं है। यह स्थानिक है और मसीह के क्षेत्र को इंगित करने के लिए रूपक के रूप में उपयोग किया जाता है, जो कि पद 12 में स्पष्ट रूप से

वर्णित उससे अलग होने के क्षेत्र के बिल्कुल विपरीत है। पिता ने हमें अपने पुत्र के क्षेत्र में स्थानांतरित कर दिया है, जिसमें हम परमेश्वर के निकट लाए गए हैं।

परिणामस्वरूप, यहूदी और गैर-यहूदी दोनों को एक आत्मा से दूसरे आत्मा में पिता तक पहुँच प्राप्त है, श्लोक 18। मसीह मेल-मिलाप कराने वाला, शांति स्थापित करने वाला है, जो विश्वास करने वाले यहूदियों और गैर-यहूदियों को परमेश्वर के एक लोगों में जोड़ता है। वह क्रूस पर अपनी मृत्यु के माध्यम से शांति स्थापित करता है, जिससे यहूदी कानून समाप्त हो जाता है, एक अर्थ में, जिसने यहूदियों को गैर-यहूदियों से अलग कर दिया था, श्लोक 14 और 15।

उसका लक्ष्य, उद्धारण, दो के स्थान पर अपने आप में एक नया मनुष्य बनाना था, इस प्रकार शांति स्थापित करना, श्लोक 15। मेल-मिलाप कराने वाला मसीह दूसरा आदम भी है, जो अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा नई सृष्टि का उद्घाटन करता है। इस प्रकार वह व्यक्तिगत विश्वासियों को उद्धार में अपने साथ जोड़ता है और उन्हें अन्य सभी विश्वासियों से भी जोड़ता है।

मसीह अपने आप में, पॉल की भाषा के अनुसार, यहूदी और गैर-यहूदी, दोनों के स्थान पर एक नया मनुष्य बनाता है। कैम्बेल सही ढंग से कहते हैं कि पॉल ने पद 15 में, मसीह में समावेश को व्यक्त करने के लिए अपने आप में शब्दों का प्रयोग किया है। वास्तव में, यह वही है जिसने उन्हें एक साथ लाया है, मैं यहूदी और गैर-यहूदी को उद्धृत कर रहा हूँ, उन दोनों को अपने साथ जोड़कर।

कैम्पबेल, फिर से, बाद के शब्द इस व्याख्या की पुष्टि करते हैं क्योंकि पॉल सिखाता है कि मसीह क्रूस के माध्यम से एक शरीर में दोनों को परमेश्वर के साथ मिलाता है, पद 16। परमेश्वर यहूदियों और अन्यजातियों के बीच शांति स्थापित करता है, उन्हें मसीह के एक शरीर में मिलाकर, जिससे वह नई मानवता का निर्माण करता है, जो परमेश्वर के लोगों, चर्च को देखने का एक और तरीका है। इफिसियों 2, 18 से 22, क्योंकि उसके द्वारा हम दोनों, यहूदी और अन्यजाति विश्वासी, एक आत्मा में पिता के पास पहुँचते हैं।

तो, अब तुम अजनबी और परदेशी नहीं रहे, बल्कि तुम संतों के साथ नागरिक और परमेश्वर के घराने के सदस्य हो, जो प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर बने हैं, मसीह यीशु स्वयं आधारशिला है, जिसमें पूरी संरचना एक साथ जुड़कर प्रभु में एक पवित्र मंदिर बनती है। उसमें, तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर के लिए एक निवास स्थान के रूप में एक साथ बनाए जा रहे हो। आश्चर्यजनक रूप से, परमेश्वर ने अन्यजातियों को उद्धार प्रदान किया है।

वे, विश्वास करने वाले यहूदियों के साथ मिलकर चर्च का गठन करते हैं। यहूदी और गैर-यहूदी, उद्धारण, दोनों के पास एक ही आत्मा में पिता तक पहुँच है, श्लोक 18। गैर-यहूदी अब परमेश्वर के लोगों से अलग नहीं हैं।

वे नागरिक और परमेश्वर के घराने के सदस्य हैं, पद 19. यहाँ, चौथी बार, पौलुस कलीसिया को एक आत्मिक मंदिर के रूप में पहचानता है। 1 कुरिन्थियों 3:16 और 17:1 कुरिन्थियों 6:16 से 20, 1 कुरिन्थियों 6:19 से 20, क्षमा करें, 2 कुरिन्थियों 6:16 देखें।

एक बार फिर, 1 कुरिन्थियों 3:16 , 17, 1 कुरिन्थियों 6:19 और 20, 2 कुरिन्थियों 6:16। यहाँ पौलुस के पत्रों में इसका चौथा उल्लेख है। छुटकारे के इतिहास के संदर्भ में, मसीह आधारशिला है, जो उसमें समाहित होने के विचार को दर्शाता है, जैसा कि 1 कुरिन्थियों 3:11 और 16 और 17 में है।

नए नियम के प्रेरित और भविष्यद्वक्ता आधार हैं, और संपूर्ण एक उद्घरण है, प्रभु में पवित्र मंदिर, इफिसियों 2:21। यह मार्ग उस नियम का अपवाद नहीं है कि परमेश्वर की उपस्थिति एक इमारत को एक मंदिर, एक निवास स्थान बनाती है, उद्घरण, आत्मा द्वारा परमेश्वर के लिए, पद 22। इस बार, पौलुस स्पष्ट रूप से मसीह में शामिल होने के विचार को स्पष्ट करता है।

वह ऐसा तीन तरीकों से करता है। बेशक, जब हमने पुराने नियम के समकालिक सुसमाचारों और कार्यों में मसीह के साथ एकता के लिए नींव का अध्ययन किया, तो हमने पहचान के साथ-साथ तीन प्रमुख विषयों में से एक को देखा, और तीसरा समावेश था। भागीदारी तीसरा है।

धन्यवाद। यह सही है - पहचान, समावेश, भागीदारी।

परमेश्वर अपनी उपस्थिति के आधार पर अपने लोगों को खुद से पहचानता है। वह उन्हें एक समुदाय के रूप में परमेश्वर के लोगों में शामिल करता है, और जब परमेश्वर उन्हें पुराने नियम में अपनी कहानी में लाता है, तो वे उसके साथ भाग लेते हैं। पॉल में मसीह के साथ एकता के आधार पर इन विषयों को नए नियम में आगे बढ़ाया गया है, और यहाँ, हम स्पष्ट रूप से समावेश के विचार को पाते हैं, जिसकी जड़ें पुराने नियम के पर्यायवाची और कृत्यों में हैं।

पॉल तीन तरीकों से समावेश की बात करता है। वह कहता है कि यह मसीह है, उद्घरण, जिसमें इमारत एक मंदिर में विकसित होती है। उसमें, यह भगवान के निवास स्थान में बनाया जा रहा है, नंबर दो और तीसरा, और यह पवित्र मंदिर प्रभु में है।

एक बार फिर। मसीह ही वह है जिसके द्वारा भवन एक मंदिर में बदल जाता है। उसके द्वारा, यह परमेश्वर के निवास स्थान के रूप में निर्मित हो रहा है, और यह पवित्र मंदिर प्रभु में है।

टिलमैन ने सही कहा है कि प्रभु में वाक्यांश का अर्थ ईश्वर पिता नहीं बल्कि प्रभु यीशु मसीह है। यह ध्यान देने योग्य है कि यहाँ मसीह में भाषा के तीनों प्रयोग, जिसमें, प्रभु में और उसमें, भवन रूपक के अनुसार, मसीह में समावेश की बात करते हैं। इसके अलावा, इस मंदिर में पवित्र त्रिदेव की पूजा होती है।

विश्वास करने वाले यहूदियों और अन्यजातियों के लिए, उसके, मसीह के द्वारा, भवन और मंदिर दोनों की एक आत्मा, पवित्र आत्मा में, पिता, परमेश्वर पिता के पास पहुँच है, पद 18। और परमेश्वर आत्मा के द्वारा प्रभु में इस पवित्र मंदिर को परमेश्वर पिता के लिए निवास स्थान बनाता है, पद 21 और 22। कैम्पबेल दो महत्वपूर्ण बिंदु जोड़ता है।

सबसे पहले, मंदिर का रूपक गतिशील है क्योंकि परमेश्वर के लोग उसके निवास के लिए एक साथ बनाए जा रहे हैं। और, रूपकों को मिलाते हुए, रूपक जैविक है क्योंकि परमेश्वर के लोग

प्रभु में एक पवित्र मंदिर में विकसित होते हैं, 2:21 । अपने धार्मिक दृष्टिकोण को संप्रेषित करने के लिए, पॉल रूपकों को मिलाता है।

वह एक इमारत को हमारी आँखों के सामने मंदिर में विकसित होते हुए चित्रित करता है। और यह गतिशील क्रिया निरंतर जारी रहती है। विश्वासियों को आत्मा द्वारा क्रमिक रूप से एक साथ बनाया जा रहा है।

पौलुस ने वास करने का विचार जोड़ा है। पवित्र आत्मा यहूदी और गैर-यहूदी दोनों ही विश्वासियों को “आत्मा के द्वारा परमेश्वर के लिए निवास स्थान” बनाने के लिए काम कर रहा है, पद 22। हालाँकि पौलुस आम तौर पर वास करने का श्रेय आत्मा को देता है और पाँच बार मसीह को, यह उन दो मौकों में से एक है जब उसने इसे परमेश्वर पिता को दिया है।

परमेश्वर आत्मा के द्वारा परमेश्वर के लिए एक निवास स्थान के रूप में मंदिर का निर्माण करता है। स्पष्ट रूप से, परमेश्वर पिता मसीह और आत्मा से अलग है। वैसे, दूसरा स्थान जहाँ पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से कहता है कि पिता हमारे भीतर निवास करता है, वह है 2 कुरिन्थियों 6:16। त्रिदेव परमेश्वर के लोगों में व्यक्तिगत और सामुदायिक रूप से निवास करते हैं।

मैं वही कहूँगा जो मैंने पहले कहा था। अगर पवित्रशास्त्र ने कभी नहीं कहा, अगर पवित्रशास्त्र ने केवल यही कहा कि आत्मा परमेश्वर के लोगों में निवास करती है, तो मैं सबसे पहले यही कहूँगा और फिर कहूँगा कि पवित्रशास्त्र ऐसा कभी नहीं कहता, लेकिन क्योंकि परमेश्वर एक त्रिएक है और त्रिएक व्यक्ति अलग-अलग लेकिन अविभाज्य हैं, हालाँकि पवित्रशास्त्र ऐसा कभी नहीं कहता, इसलिए हमें यह कहना होगा कि संपूर्ण त्रिएक हमारे भीतर निवास करता है, विशेष रूप से पवित्र आत्मा। लेकिन पवित्रशास्त्र ऐसा कहता है।

पाँच या छह बार मसीह के बारे में कहा गया है कि वह हमारे अंदर वास करता है, और दो बार ऐसा हुआ है जिसमें से यह एक है। पिता परमेश्वर के लोगों में वास करता है। हम परमेश्वर की सामान्य सर्वव्यापकता और उसकी विशेष उपस्थिति के बीच अंतर कर सकते हैं, और बेशक, पिता की विशेष उपस्थिति अब स्वर्ग में है जहाँ परमेश्वर वास करता है।

देहधारी पुत्र की विशेष उपस्थिति परमेश्वर के दाहिने हाथ पर है, और आत्मा की विशेष उपस्थिति, जो वास्तव में वास करने में मुख्य प्रेरक है, परमेश्वर के लोगों में व्यक्तिगत रूप से है और यहाँ सामूहिक रूप से इस पर जोर दिया गया है। इफिसियों 6:10-12 एक अद्भुत आध्यात्मिक युद्ध का अंश है। इफिसियों 6:10-12। अंत में, पिता हमारे भीतर वास करता है।

पौलुस लिखता है, "प्रभु में और उसकी शक्ति की शक्ति में बलवन्त बनो। परमेश्वर के सारे हथियार बाँध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको। क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध मांस और लहू से नहीं, परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस वर्तमान अन्धकार के ऊपर की शक्तियों से, और दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है, जो आकाश में हैं।"

इस आध्यात्मिक युद्ध पाठ में, पॉल पाठकों को, उद्धरण, परमेश्वर के सम्पूर्ण कवच को धारण करने का आदेश देता है, इस तथ्य के प्रकाश में कि उनका युद्ध, उद्धरण, इस वर्तमान अंधकार

पर ब्रह्मांडीय शक्तियों के विरुद्ध है। पद 11 और 12. कैंपबेल ने लिखा है, और मैंने इससे सीखा, इसने मुझे निर्देश दिया; कैंपबेल ने लिखा है कि यह न केवल रोमन सैन्य हथियारों को याद दिलाता है, जैसा कि आम तौर पर जाना जाता है, बल्कि यशायाह में पाए गए युद्ध में यहोवा और उसके मसीहा के विवरण भी याद दिलाता है।

और उनका निष्कर्ष उद्घरण के योग्य है। कॉन्स्टेंटाइन कैंपबेल, *पॉल और यूनियन विद क्राइस्ट को उद्धृत करते हुए*, उद्धरण देते हैं, इस प्रकार, इफिसियों 6:10-17 के निहितार्थों में से एक यह है कि विश्वासियों को स्वयं प्रभु के कवच को धारण करना चाहिए, वह कवच जिसे प्रभु स्वयं युद्ध में पहनते हैं, जो आध्यात्मिक युद्ध के मामले में उनके साथ एकता की भावना को जागृत करता है। यह देखते हुए कि यह एकता पूरे पेरिकोपे में व्याप्त है, यह निष्कर्ष निकालना उचित है कि 6:10 में एन्कोरियो इन द लॉर्ड, प्रभु के साथ एकता को व्यक्त करता है।

इस प्रकार, जब प्रेरित पाठकों को प्रभु में और उसकी शक्ति की शक्ति में मजबूत होने की आज्ञा देता है, तो पद 10 में, उसका मतलब है कि उन्हें मसीह और उसकी महान शक्ति के साथ अपने मिलन के कारण मजबूत होना चाहिए। इफिसियों में एक आखिरी अंश, इफिसियों 6:21-22। आपको लग सकता है कि यह एक अजीब विकल्प है, लेकिन मैं आपको एक पल में दिखाऊंगा कि मैंने इसे क्यों चुना। ताकि आप भी जान सकें कि मैं कैसा हूँ और क्या कर रहा हूँ, प्रिय भाई और प्रभु में वफादार सेवक तुखिकुस आपको सब कुछ बताएगा।

मैंने उसे तुम्हारे पास इसी उद्देश्य से भेजा है, कि तुम जान सको कि हम कैसे हैं और वह तुम्हारे हृदयों को प्रोत्साहित करे। मसीह के साथ एकता इस पूरे पेरिकोप में व्याप्त है, और यह पॉल की सोच है कि आधे समय में, वह अपने पत्रों के आरंभिक और अंतिम अभिवादन में एकता के संदर्भों को शामिल करता है जैसा कि वह यहाँ करता है। वह इफिसियन चर्च को बताता है कि वह तुखिकुस को उनके पास भेज रहा है ताकि उन्हें पॉल की परिस्थितियों के बारे में सूचित किया जा सके और उन्हें प्रोत्साहित किया जा सके।

वह तुखिकुस को एक प्रिय भाई और प्रभु में वफादार सेवक के रूप में वर्णित करता है, श्लोक 21। यहाँ प्रभु में विश्वासियों के लिए एक व्याख्या के रूप में पॉल में अक्सर कार्य करता है। तब अर्थ यह है कि तुखिकुस एक वफादार ईसाई सेवक है, लेकिन ईसाई कहने के बजाय, वह प्रभु में सेवक कहता है।

इसका भी यही अर्थ है। मसीह के साथ एकता परमेश्वर के लोगों को नामित करने के लिए बहुत आम बात हो गई है। मैं इसे फिर से कहूँगा: सबसे व्यापक तरीका जिससे नया नियम उद्धार के अनुप्रयोग को नामित करता है, परमेश्वर वास्तव में अपने अनुग्रह को लाता है जिसकी योजना अनंत काल में बनाई गई थी और यह कार्य यीशु द्वारा पहली शताब्दी में पूरा किया गया था, वास्तव में उस अनुग्रह को मानव जीवन पर लाने के लिए, उन्हें बचाने के लिए, उन्हें अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से जीवन की ओर ले जाने के लिए, मसीह के साथ एकता है।

क्योंकि आध्यात्मिक रूप से उसके साथ जुड़ने से, हमें उसके सभी उद्धारक लाभ मिलते हैं। हम उसमें पुनर्जीवित होते हैं। हम उसमें अपनाए जाते हैं, उसमें परिवर्तित होते हैं, उसमें धर्मी ठहराए जाते हैं।

हम उसमें दृढ़ बने रहते हैं। जैसा कि इफिसियों 1 में कहा गया है, परमेश्वर की सभी आध्यात्मिक आशीषें हमें मसीह यीशु में दी गई हैं। स्वर्गीय स्थानों में प्रत्येक आध्यात्मिक आशीष मसीह यीशु में कलीसिया को दी जाती है।

फिलिप्पियों 3, फिलिप्पियों में कई अंश हैं, लेकिन एक बार फिर, मैं सिर्फ कुछ अंश चुनकर बता रहा हूँ ताकि मसीह के साथ एकता के पौलुस के सिद्धांत की चौड़ाई और कुछ हद तक गहराई को प्रदर्शित किया जा सके। फिलिप्पियों 3:12, 13, 14. इसे सही तरीके से करने के लिए, मुझे पद 4 से शुरू करना होगा। शत्रु, पौलुस के पास उनके लिए कड़े शब्द हैं, शरीर को विकृत करने वाले, दुष्ट, कुत्ते, वाह, पौलुस बहुत बढ़िया है।

वे शरीर पर, मानव वंशावली और प्रदर्शन पर भरोसा करते हैं। मैं नहीं, पॉल कहते हैं, मैं अब ऐसा नहीं करता। हालाँकि मैं खुद, फिलिप्पियों 3:4, शरीर पर भरोसा करने का एक कारण हो सकता है अगर कोई करता है।

अब्राहम की वाचा को बनाए रखने के लिए आठवें दिन मेरा खतना किया गया। उसके माता-पिता इस्राएल के लोगों के वफादार यहूदी थे, जो पूरी दुनिया में एकमात्र वाचा वाला राष्ट्र था। बेंजामिन के गोत्र की एकमात्र वाचा वाली जातीयता, दो वफादार दक्षिणी जनजातियों में से एक जिसने सुलैमान की मृत्यु के बाद राज्यों के टूटने में धर्मत्याग नहीं किया।

इब्रानियों में से एक इब्रानी। बेबीलोन की कैद से लौटने के बाद यहूदी आम तौर पर अरामी भाषा बोलते थे, लेकिन कुछ परिवार अलग थे, और पॉल का परिवार उनमें से एक था। उनकी माँ ने एक कोषेर रसोई रखी थी, और वे अपने घर में हिब्रू बोलते थे।

हिब्रू माता-पिता का हिब्रू पुत्र। कानून के अनुसार, एक फरीसी। हमारे पास फरीसियों के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण है, और यह सही भी है, क्योंकि यीशु ने उन्हें पाखंडी होने आदि के लिए फटकार लगाई, और उन्होंने उसे बड़े पैमाने पर अस्वीकार कर दिया।

लेकिन आम यहूदी फरीसियों का बहुत सम्मान करते थे। वे समर्पित आम लोग थे जो कानून की अपेक्षा से ज़्यादा प्रार्थना करते थे, दान देते थे और उपवास करते थे। और लोग उन्हें आध्यात्मिक रूप से बहुत समर्पित यहूदी मानते थे।

जहाँ तक उत्साह की बात है, पौलुस कहता है, मैं कलीसिया का सतानेवाला था। जहाँ तक व्यवस्था के अधीन धार्मिकता की बात है, तो मैं निर्दोष था। मैं कलीसिया का सतानेवाला था।

इसका मतलब यह नहीं है कि पौलुस वास्तव में निर्दोष था, लेकिन एक फरीसी के रूप में, इब्रानियों के इब्रानी के रूप में, उसने जोश से कानून का पालन किया और रोमियों 7 तक इसे तोड़ने के बारे में सचेत नहीं था। परमेश्वर ने इसे उसके लिए जीवित कर दिया, और इसने उसे

उसके अपने लालच से मार डाला। लेकिन जो भी लाभ मुझे मिला, फिलिप्पियों 3:7, मैंने उसे मसीह की खातिर हानि के रूप में गिना। वह आगे कहता है।

वास्तव में, मैं अपने प्रभु मसीह यीशु को जानने के अत्यधिक मूल्य के कारण सब कुछ को हानि मानता हूँ। उसके लिए, मैंने सभी चीजों का नुकसान उठाया है और उन्हें कचरा मानता हूँ। स्कुबाला, जिसका अनुवाद बकवास है, एक व्यंजना है।

इसका मतलब है गोबर। हमारी चिंता यह है कि मैं मसीह को पा सकूँ और उसमें पाया जा सकूँ। ये शब्द।

मेरी अपनी वह धार्मिकता नहीं, जो व्यवस्था से है, वरन वह धार्मिकता है, जो मसीह पर विश्वास करने से है। और परमेश्वर की ओर से, जो विश्वास करने पर निर्भर है, कि मैं उसे और उसके पुनरुत्थान की सामर्थ को जानूँ, और उसके साथ दुखों में सहभागी हो जाऊँ, और उसकी मृत्यु की समानता में आ जाऊँ।

ताकि मैं किसी भी तरह से मृतकों में से पुनरुत्थान प्राप्त कर सकूँ। पॉल को मसीह में परमेश्वर ने स्वीकार किया है। लेकिन वह एक मसीही जीवन जीने का भी प्रयास करता है।

वह ईश्वर की स्वीकृति के लिए प्रयास नहीं करता। उसे पहले से ही विश्वास के माध्यम से अनुग्रह से वह प्राप्त है। मुझे पढ़ना जारी रखना चाहिए था।

ऐसा नहीं है कि मैंने इसे पहले ही प्राप्त कर लिया है या मैं पहले से ही परिपूर्ण हूँ। मैं अभी फिलिप्पियों 3:12 पर हूँ। लेकिन मैं इसे अपना बनाने के लिए आगे बढ़ता हूँ क्योंकि मसीह यीशु ने मुझे अपना बना लिया है।

भाइयों, मैं यह नहीं मानता कि मैंने इसे अपना बना लिया है। लेकिन एक बात जो मैं करता हूँ, वह यह है कि जो पीछे रह गया है उसे भूलकर और जो आगे है उसके लिए आगे बढ़ते हुए, मसीह यीशु में परमेश्वर के ऊपर बुलाए जाने के पुरस्कार के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ना है। इन व्याख्यानों में थोड़ा आगे मैं उन आयतों पर चर्चा करूँगा जिन्हें मैंने अभी-अभी मसीह में पाए जाने और परमेश्वर की धार्मिकता प्राप्त करने आदि के बारे में पढ़ा था।

लेकिन अभी के लिए, जब मैं मसीह की भाषा में चर्चा करूँगा तो मैं इसे समझूँगा क्योंकि यह पौलुस के उन छह स्थानों में से एक है जहाँ मसीह न केवल अप्रत्यक्ष रूप से एकता की बात करता है, जैसा कि सभी अंश करते हैं, बल्कि सीधे मसीह के साथ एकता की बात करता है और इसलिए औचित्य में मसीह के साथ एकता की बात करता है। लेकिन मैं चाहता हूँ कि हम जिन शब्दों पर तुरंत ध्यान दें वे पद 12-14 में हैं। पौलुस को मसीह में परमेश्वर द्वारा स्वीकार किया जाता है।

लेकिन वह एक मसीही जीवन जीने का भी प्रयास करता है। वह कड़ी मेहनत करता है। वह मेहनत करता है।

वह संघर्ष करता है। कुलुस्सियों 1, अंतिम आयत, वह परिश्रम करता है। लेकिन वह जल्दी से जोड़ता है, वह उस कुलुस्सियों 1 पाठ में उसके अंदर काम करने वाली परमेश्वर की शक्ति के अनुसार परिश्रम करता है।

कुलुस्सियों 1:29. इसके लिए मैं हर एक को मसीह यीशु में परिपक्व होते हुए प्रस्तुत करता हूँ, और अपनी सारी शक्ति से जो उस ने मुझ में सामर्थ्य से काम की है, परिश्रम करता हूँ, और संघर्ष करता हूँ। पौलुस परमेश्वर की स्वीकृति के लिए प्रयास नहीं करता।

वह अपने प्रदर्शन से बचने की कोशिश नहीं कर रहा है। वह पहले से ही विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा बचा हुआ है। लेकिन वह अपने पापों से संघर्ष करता है क्योंकि वह अपने शरीर के पुनरुत्थान की लालसा करता है।

यहाँ बताया गया है कि वह इसे कैसे व्यक्त करता है। उद्धरण, मैं मसीह यीशु में परमेश्वर के ऊपर की ओर बुलाहट के पुरस्कार के लिए लक्ष्य की ओर बढ़ता हूँ, पद 14। मसीह में, यीशु का उपयोग संभवतः कारणात्मक रूप से किया जाता है।

पौलुस का ऊपर की ओर बुलावा मसीह यीशु में है, अर्थात् मसीह के व्यक्तित्व और उद्धारकारी कार्य के कारण। फिलिप्पियों 4:19 . फिर से, यह पौलुस द्वारा मसीह के साथ एकता के उपयोग में कुछ विविधता को दर्शाता है।

पौलुस फिलिप्पियों को इस बात के लिए धन्यवाद देता है कि उसने उन्हें अपने लिए योगदान करने की अनुमति दी। यह एक बड़ी प्रशंसा थी। इसका मतलब है कि उसे उनके बारे में और प्रभु के साथ उनके अपने रिश्ते के बारे में वास्तविक विश्वास था कि इससे उनके बीच कोई मतभेद या आलोचना पैदा नहीं होगी।

मैं उपहार नहीं चाहता, बल्कि मैं ऐसा फल चाहता हूँ जो तुम्हारा श्रेय बढ़ाए। फिलिप्पियों 4-18। मुझे पूरा भुगतान और उससे भी ज़्यादा मिल गया है।

इपफ्रदीतुस के हाथ से जो भेंट तू ने भेजी थी, उसे पाकर मैं तृप्त हो गया हूँ, अर्थात् सुगन्धित भेंट, और परमेश्वर को ग्रहण करने योग्य और भावती भेंट। और मेरा परमेश्वर भी अपनी महिमा सहित मसीह यीशु में जो धन है, उसके अनुसार तेरी हर एक घटी पूरी करेगा। हमारे परमेश्वर और पिता की महिमा युगानुयुग होती रहे।

आमीन। प्रेरित ने भरोसा जताया कि परमेश्वर फिलिप्पियों की ज़रूरतों को पूरा करेगा। संभवतः मसीह में, यीशु महिमा में धन को योग्य बनाता है और संगति को चिह्नित करने के लिए उपयोग किया जाता है।

पौलुस के मन में परमेश्वर की महिमामयी सम्पत्ति मसीह के साथ इतनी जुड़ी हुई है कि वह आसानी से एक को दूसरे के साथ जोड़ देता है। मेरा परमेश्वर मसीह यीशु में महिमा में अपने धन के अनुसार, जो मसीह यीशु के साथ जुड़ा हुआ है, तुम्हारी हर ज़रूरत को पूरा करेगा। हम देखते

हैं कि यहाँ पौलुस उपहार देने और लेने के प्रथम-शताब्दी के रोमी रिवाज का पालन नहीं करता है।

रोमन समाज में अनुग्रह की कोई धारणा नहीं थी। उपहार दिए जाते थे और प्राप्तकर्ता की ओर से उन्हें देना एक दायित्व था। इसमें देने वाले की ओर से अनुग्रह शामिल था क्योंकि प्राप्तकर्ता दाता के प्रति बाध्य था।

पॉल के साथ ऐसा नहीं है। वह उनके उपहार को स्वीकार करता है। वह इसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद देता है।

वह इसके लिए उनका धन्यवाद करता है। और बदले में वह उन्हें यह भरोसा देता है कि परमेश्वर उनकी ज़रूरतें पूरी करेगा। वह अनुग्रह के नाम पर सामाजिक परंपरा को तोड़ता है।

ईसाइयों को इस तरह जीने की ज़रूरत नहीं है। पूरा ईसाई धर्म का सुसमाचार सामाजिक परंपरा को तोड़ता है। परमेश्वर पापियों से बिना किसी शर्त के प्यार करता है, और वे चाहें तो भी उसे कुछ भी नहीं दे सकते।

वह जो दावा करता है वह हमारा पूरा जीवन है जैसा कि केल्विन ने बहुत प्रभावशाली ढंग से सिखाया। कुलुस्सियों 1:13 और 14. इसलिए 11 से शुरू करते हुए, कुलुस्सियों 1. आप उसकी महिमा की शक्ति के अनुसार सभी प्रकार की सामर्थ्य से बलवन्त होते जाएँ, ताकि आप आनन्द के साथ हर प्रकार का धीरज और धीरज रख सकें, और पिता का धन्यवाद करते रहें, जिसने आपको ज्योति में पवित्र लोगों की विरासत में सहभागी होने के योग्य बनाया है।

उसने हमें अंधकार के क्षेत्र से छुड़ाया है और अपने प्रिय पुत्र के राज्य में स्थानांतरित किया है, जिसमें हमें छुटकारा, पापों की क्षमा मिलती है। पौलुस परमेश्वर पिता के बारे में बात करता है जो विश्वासियों को पाप और न्याय के अंधकार के राज्य से बचाता है, जिसका अर्थ है उन्हें दूसरे राज्य में डालना, जो उसके प्रिय पुत्र का राज्य है, पद 13। यह राज्य स्थानांतरण पद 14 में किसके उपयोग को समझने की कुंजी है।

परमेश्वर ने हमें अंधकार के क्षेत्र से छुड़ाया और अपने प्रिय पुत्र के राज्य में स्थानांतरित किया जिसमें हमें छुटकारा, पापों की क्षमा मिलती है। यह परिचित स्थानिक प्रयोग है जिसका संबंध स्थान या स्थान से है, जिसका प्रयोग लाक्षणिक रूप से परमेश्वर के प्रिय पुत्र के क्षेत्र में मसीह के क्षेत्र या क्षेत्र या राज्य के बारे में बात करने के लिए किया जाता है। ईसाइयों के पास छुटकारा और क्षमा है।

वास्तव में उनके पास परमेश्वर की सारी आशीर्षें हैं। यहाँ छुटकारे और क्षमा का उल्लेख किया गया है। या फिर कुलुस्सियों 1:27 और 28 के बारे में क्या ख्याल है।

परमेश्वर ने अपने पवित्र जनों को यह प्रगट करना चाहा कि अन्यजातियों में उस भेद की महिमा का धन कितना बड़ा है, और वह यह है कि मसीह जो महिमा की आशा है, तुम में रहता है। उसी का प्रचार हम करते हैं, कि मसीह तुम में रहता है, और सब को चिताते और सब प्रकार की बुद्धि

से सिखाते हैं, कि हम सब को मसीह में सिद्ध करके उपस्थित करें। इसी के लिये मैं उस की सारी सामर्थ से जो उस ने मुझ में सामर्थ से काम की है, परिश्रम और यत्न करता रहता हूँ।

अन्यजातियों को लिखते हुए, पौलुस यहाँ उस उद्धार का वर्णन बड़े शब्दों में करता है जिसे परमेश्वर ने संतों के सामने प्रकट किया है। इस रहस्य की महिमा का खजाना, पद 27। रहस्य मसीह में परमेश्वर के महान कार्य को संदर्भित करता है, जो केवल तब पूरी तरह से प्रकट हुआ जब मसीह आया और उसने कलीसिया में आत्मा को उंडेला।

हम महिमा शब्द को छोड़ देते हैं क्योंकि इसे परिभाषित करना कठिन है। पीटी ओ'ब्रायन इस प्रथा को सुधारते हैं। उद्धरण, प्रेरित इस बात पर जोर देना चाहते थे कि यह अद्भुत रहस्य महिमा, स्वयं परमेश्वर के चरित्र का हिस्सा है।

धन-दौलत से पौलुस मसीह में अपनी आशीषों के भरपूर दान की ओर इशारा करता है। पीटी ओ'ब्रायन की टिप्पणी, *कुलुस्सियों और फिलेमोन*। यह महान रहस्य क्या है? पौलुस 27 में उत्तर देता है।

यह मसीह है जो आप में है, महिमा की आशा, परमेश्वर का प्रिय पुत्र, जिसमें हमें छुटकारा, पापों की क्षमा मिलती है, जो हमारे स्थान पर मरकर और तीसरे दिन फिर से जी उठकर हमारे बाहर अपना उद्धार कार्य करता है। इससे भी बढ़कर, वह गैर-यहूदियों के भीतर रहने का अनुग्रह करता है, जो पहले परमेश्वर के लोगों से बाहर थे। वास्तव में, मसीह सभी विश्वासियों में वास करता है, चाहे वे यहूदी हों या ईसाई, यहूदी हों या गैर-यहूदी।

इस अंतरंग संबंध में, वह भविष्य में उद्धार के लिए हमारी आशा का स्रोत है। वह महिमा की आशा है। हमारे भीतर उसकी उपस्थिति हमें अंतिम महिमा का आश्वासन देती है।

उचित चेतावनी और निर्देश के साथ इस मसीह की घोषणा ही परमेश्वर का प्राथमिक साधन है जो अपने लोगों को परिपक्वता की ओर ले जाता है। पौलुस का लक्ष्य प्रत्येक विश्वासी को मसीह में परिपक्व प्रस्तुत करना है, उद्धरण, उद्धरण समाप्त। पद 22 में इसके प्रयोग की तुलना में वर्तमान शब्द में फोरेंसिक ओवरटोन हैं, और इस प्रकार यह विचार सभी को मसीह में परिपक्व के रूप में प्रस्तुत कर रहा है, अर्थात्, मसीह के समक्ष, जो न्यायकर्ता और उद्धारकर्ता है।

तो, कैंपबेल फिर से। विश्वासी परमेश्वर के लिए जीने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं, श्लोक 29, लेकिन वे ऐसा पॉल के उद्धरण के अनुसार करते हैं, अपनी सारी ऊर्जा के साथ जो वह शक्तिशाली रूप से भीतर काम करता है। पॉल कहते हैं मैं, हम कहेंगे हम, श्लोक 29।

अर्थात्, हमारे अन्दर वास करने वाला मसीह अपने लोगों को उसके और उसके राज्य के लिए परिश्रम करने की शक्ति देता है। कुलुस्सियों 2:9 और 10. सावधान रहो! कोई तुम्हें उस तत्व-ज्ञान और व्यर्थ छल के द्वारा अपना अहेर न बना ले, जो मनुष्यों की परम्पराओं और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार है, पर मसीह के अनुसार नहीं।

क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता शरीर वास करती है, और तुम उसमें भरे गए हो जो सारी व्यवस्था और अधिकार का मुखिया है। पौलुस का मसीह-विज्ञान बहुत ऊँचा है। ये आयतें, कुलुस्सियों 2, 9 और 10, मसीह के साथ एकता को समझने में हमारी मदद करने के लिए एक महत्वपूर्ण इकाई बनाती हैं।

पहला मसीह के परमेश्वर के साथ मिलन की बात करता है। दूसरा मसीह के साथ हमारे मिलन की बात करता है। मसीह में, ईश्वरत्व की संपूर्ण परिपूर्णता शारीरिक रूप से निवास करती है।

यही मसीह का परमेश्वर के साथ मिलन है। आप उसमें भर गए हैं, उसमें भर गए हैं जो सभी नियमों और अधिकारों का मुखिया है। यही परमेश्वर का हमारे साथ मिलन है।

कैंपबेल ईश्वर के अपने पुत्र के साथ मिलन और क्षमा किए गए पापियों के रूप में उसी पुत्र के साथ हमारे मिलन के बीच के संबंध के धार्मिक निहितार्थों को रेखांकित करते हैं। उद्धरण, इसे मसीह के साथ मिलन व्यक्त करने के रूप में समझना बेहतर है। यह उन आधा दर्जन स्थानों में से एक है।

मैं फिर से यही कहूंगा। मसीह के साथ एकता की भाषा हमेशा मसीह और विश्वासियों के बीच एक रिश्ते को पूर्व निर्धारित करती है, लेकिन कई बार एक और सूक्ष्मता के साथ। हम डोमेन और एजेंसी और साधन और इसी तरह के अन्य स्थानीय अर्थों को देखते रहते हैं।

लेकिन आधा दर्जन जगहों पर, इसका सबसे महत्वपूर्ण पहलू मसीह के साथ एकता है। यह उन छह में से एक है। इसे मसीह के साथ एकता व्यक्त करने के रूप में समझना बेहतर है।

विश्वासी उसमें एकता के कारण भरे हुए हैं। इस पाठ की ताकत पद 10 के दोनों ओर के पदों से उत्पन्न होती है। पद 2-9 में मसीह में शारीरिक रूप से निवास करने वाले परमेश्वर की परिपूर्णता की बात कही गई है।

इसका मतलब यह नहीं है कि मसीह का शरीर परमेश्वर से भरा हुआ है, बल्कि यह कि परमेश्वर के साथ अपने मिलन के माध्यम से, मसीह परमेश्वर के ईश्वरत्व की पूर्णता में हिस्सा लेता है। दूसरा, 2:11 मसीह के खतना में खतना किए जाने की बात करता है। 2:12 उसके बपतिस्मा में मसीह के साथ दफनाए जाने और उसके साथ जी उठने का उल्लेख करता है।

2:13 उसके साथ जीवित किए जाने की बात करता है। इस प्रकार इन तीन आयतों में उन वास्तविकताओं के कई संदर्भ हैं जो विश्वासी मसीह के साथ अपनी एकता और भागीदारी के माध्यम से साझा करते हैं। यह देखते हुए कि इसका संदर्भ मसीह के साथ एकता की इतनी दृढ़ता से प्रशंसा करता है, 2-10 में भी उसे इसी तरह से सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है।

एफएफ ब्रूस ने कुलुस्सियों, फिलेमोन और इफिसियों पर अपनी टिप्पणी में संक्षिप्त बातें कही हैं। उद्धरण: ईसाई, उनके साथ एकता के द्वारा, उनके जीवन में भाग लेते हैं। यदि ईश्वरत्व की पूर्णता उनमें थी, तो उनकी पूर्णता उन्हें प्रदान की गई थी।

और कुलुस्सियों के तर्क में, कुलुस्सियों के चर्च को परमेश्वर से विशेष कथित रहस्योद्घाटन की आवश्यकता नहीं है, जो कुलुस्सियों के पाखंडियों ने पेश किया था, न ही प्रभु के भोज में बपतिस्मा के अलावा विशेष समारोहों की, जिसे मसीह ने निर्धारित किया था। नहीं। मसीह के होने से, वे पूर्ण हैं, वे संपूर्ण हैं, उनके पास वह सब कुछ है जिसकी उन्हें आवश्यकता है क्योंकि ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता शारीरिक रूप से उनमें निवास करती है और उसने उन्हें अपने आप में पूर्ण बनाया है।

उसने उन्हें अपने आप से भर दिया है और इस तरह उद्धार दिया है। कुलुस्सियों 3:1-4 भी इस संबंध में शिक्षाप्रद है, याद रखें कि 2:20 में मसीह के साथ उनकी मृत्यु में एकता की बात कही गई है। यदि मसीह के साथ, कुलुस्सियों 2:20, तुम संसार की आदिम आत्माओं के लिए मर गए, तो फिर तुम संसार में जीवित रहते हुए भी उसके नियमों के अधीन क्यों रहते हो? 3:1, यदि तुम मसीह के साथ जी उठे हो, तो उन वस्तुओं की खोज करो जो ऊपर की हैं, जहाँ मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है।

पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ। क्योंकि तुम तो मर चुके हो और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह जो तुम्हारा जीवन है, प्रगट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा सहित प्रगट होगे।

पॉल झूठे शिक्षकों के कार्यक्रम और उनकी तपस्वी मांगों के खिलाफ बोल रहा है। वे अन्य बातों के अलावा यह सिखा रहे थे कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए मानव शरीर का कठोर उपचार आवश्यक है। यहाँ, पॉल उस संदेश को दोहराते हुए कहते हैं, अपना मन पृथ्वी पर की वस्तुओं पर मत लगाओ।

3:2, लेकिन उसका ध्यान कहीं और है। सकारात्मक रूप से, वह अपने पाठकों को एक अलग दिशा में निर्देशित करता है। ऊपर, दो बार, वह आदेश देता है।

जो चीज़ें ऊपर हैं, उनकी खोज करो। अपना मन ऊपर की चीज़ों पर लगाओ, 1:2। क्यों? क्योंकि ऊपर ही वह जगह है जहाँ मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठा है।

झूठे शिक्षकों की विनाशकारी शिक्षा का प्रतिकारक मसीह है, 2:8-15। झूठी शिक्षा के व्यर्थ तप का प्रतिकारक मसीह है, 16-23। मैं इसे फिर से दोहराऊंगा, क्योंकि पौलुस मसीह को ज़हर के प्रतिकारक के रूप में लागू करता है, बौद्धिक ज़हर और व्यावहारिक ज़हर दोनों के लिए।

झूठी शिक्षा का प्रतिकारक, मसीह, कुलुस्सियों 2:8-15। झूठी नैतिकता का प्रतिकारक, तपस्वीपन, मसीह, 2, 16-23। इसलिए, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है जब प्रेरित कुलुस्सियों के मसीहियों को ऊपर इंगित करता है कि मसीह कहाँ है।

खास तौर पर, पौलुस अपनी कहानी में मसीह के साथ हमारे मिलन को उसकी खोज करने की प्रेरणा के रूप में रेखांकित करता है। जब वह अपने पाठकों से कहता है, तुम मर चुके हो, 3:3, तो निश्चित रूप से उसका मतलब है कि वे मसीह के साथ मर चुके हैं, जैसा कि उसने 2-20 में कहा है। वह विशेष रूप से मसीह के पुनरुत्थान में उसके साथ मिलन का उल्लेख करता है।

अपने पाठकों की मसीह के साथ उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान में एकता के कारण, पॉल कहते हैं, आपका जीवन ईश्वर में मसीह के साथ छिपा हुआ है, श्लोक 3। झूठे शिक्षकों के तपस्वी सिद्धांत के विपरीत, पॉल के पाठकों को अपने जीवन में मसीह का अनुसरण करना चाहिए, मसीह जो ऊपर है। क्या इसका मतलब यह है कि उन्हें अपने सांसारिक जीवन को तुच्छ समझना चाहिए? शायद ही, अध्याय 3 के बाकी हिस्सों में प्रेरित चर्च में एक-दूसरे से और घर पर परिवारों से संबंध बनाने के निर्देश देते हैं। यदि आप चाहें तो यह सांसारिक शिक्षा है, लेकिन इसमें आध्यात्मिकता के साधन के रूप में शारीरिक इच्छाओं को नकारना शामिल नहीं है।

याद रखें, पौलुस कहता है, आपका जीवन परमेश्वर में मसीह के साथ छिपा हुआ है, पद 3। बल्कि, इसमें स्वर्ग में मसीह पर ध्यान केंद्रित करना और पृथ्वी पर रोज़मर्रा के जीवन के लिए मसीह के साथ एकता से शक्ति प्राप्त करना शामिल है। आश्चर्यजनक रूप से, पौलुस मसीह की कथा में हमारी भागीदारी को और भी आगे ले जाता है। हम उसके साथ मरे, उसके साथ दफनाए गए, उसके साथ उठे, उसके साथ ऊपर चढ़े, और उसके साथ स्वर्ग में बैठे।

और, एक अर्थ में, हम उसके साथ फिर से आते हैं। पॉल का यही मतलब है जब वह लिखता है, उद्घरण, जब मसीह, जो आपका जीवन है, प्रकट होता है, तो आप भी उसके साथ महिमा में प्रकट होंगे, स्पष्ट रूप से, जब मसीह दूसरे आगमन के संदर्भ में प्रकट होता है।

यह तथ्य कि हम महिमा में उसके साथ प्रकट होंगे, यदि आप ऐसा कहें तो हमारे दूसरे आगमन को दर्शाता है। हमें सावधानीपूर्वक परिभाषित करने की आवश्यकता है कि किस अर्थ में हमारा दूसरा आगमन होगा और किस अर्थ में नहीं। बेशक, हमारा दूसरा आगमन, जैसा कि कहा जाता है, मसीह के साथ एकता में है।

डगलस म्यू, अपनी महान कुलुस्सियों की टिप्पणी में, जो मेरी पसंदीदा बन गई है, हमारी सहायता के लिए आता है। उद्घरण: जब वह अपनी वापसी के समय महिमा में प्रकट होता है, तो विश्वासी उसके साथ दिखाई देंगे। मसीह के साथ हमारी पहचान, जो अब वास्तविक है लेकिन छिपी हुई है, एक दिन प्रकट होगी।

क्योंकि मसीह अब हम में है, इसलिए हमारे पास महिमा की आशा है, कुलुस्सियों 1:27। और यह वही एकता है जो दूसरी दिशा में व्यक्त की जाती है, हम मसीह में हैं, जो आशा को उसकी निश्चित उपलब्धि तक ले जाएगी, उद्घरण समाप्त। मसीह के साथ हमारी एकता इतनी व्यापक है कि पॉल सिखाता है कि हम, एक अर्थ में, उसके साथ फिर से आएंगे।

केवल उसके लौटने पर ही हमारी सच्ची आध्यात्मिक पहचान उजागर होगी। अब हम केवल सच्चे व्यक्तियों के करीब पहुँचेंगे, हम महिमा में होंगे। और हम पुनरुत्थान में महिमा और पवित्रता में होंगे।

हालाँकि यह बहुत कम लोगों को पता है, लेकिन पौलुस रोमियों 8:18 और 19 में इसी सत्य के बारे में बात करता है। उद्घरण, मैं समझता हूँ कि इस समय के कष्ट उस महिमा के साथ तुलना करने

लायक नहीं हैं जो हम में प्रकट होने वाली है। क्योंकि सृष्टि उत्सुकता से उसके प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रही है, परमेश्वर के पुत्रों का मुख्य शब्द, उद्धारण बंद करें।

शब्द का अनुवाद 'प्रकटीकरण' है, जिसका शाब्दिक अनुवाद 'प्रकाशन' है। यह शब्द शास्त्र की अंतिम पुस्तक, यूहन्ना के प्रकाशितवाक्य के शीर्षक में शामिल है, और अक्सर मसीह यीशु की वापसी को संदर्भित करता है। और रोमियों 8, 19 में, यह हमारी वापसी को संदर्भित करता है, ऐसा कहा जा सकता है।

सृष्टि परमेश्वर के पुत्रों के प्रकटीकरण के लिए उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रही है। यह कैसे संभव है कि हमें प्रकटीकरण मिलेगा? इसका उत्तर है, बेशक, मसीह के साथ एकता के कारण। यूहन्ना एक ही वास्तविकता के बारे में अलग-अलग शब्दों में बात करता है।

उद्धारण, प्रिय, हम अब परमेश्वर के बच्चे हैं, और हम क्या होंगे यह अभी तक प्रकट नहीं हुआ है, लेकिन हम जानते हैं कि जब वह प्रकट होगा, तो हम उसके जैसे होंगे क्योंकि हम उसे वैसा ही देखेंगे जैसा वह है। 1 यूहन्ना 3, 2. संक्षेप में, पॉल के पाठक, जीवन और भविष्य परमेश्वर के पुत्र के साथ इतने बंधे हुए हैं कि उसके साथ एकता के आधार पर, पॉल मसीह के बारे में बात कर सकता है, उद्धारण, जो आपका जीवन कुलुस्सियों के लिए है। संदर्भ में, वह झूठे शिक्षकों के दावों का प्रतिवाद कर रहा है कि कुलुस्सियों के ईसाइयों में कुछ कमी है।

इसके विपरीत, प्रेरित जोर देकर कहते हैं कि मसीह के साथ एकता में उन्हें जो कुछ भी चाहिए वह सब उनके पास है और इस प्रकार वे सुरक्षित हैं। वास्तव में, अब उनका जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है, पद 3। ओ'ब्रायन उनके और हमारे आनंदमय भविष्य को व्यक्त करते हैं। हम भी उनके जीवन को साझा करेंगे।

हम भी, जो उनके जीवन को साझा करते हैं, उनके शानदार एपीफानी को साझा करेंगे।"

हम मसीह के साथ एकता पर पॉलिन ग्रंथों के माध्यम से अपनी यात्रा जारी रखेंगे। वास्तव में, हम उन्हें अपने अगले व्याख्यान में पूरा करेंगे और फिर उसी से संबंधित पॉल के विचारों पर आगे बढ़ेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा पवित्र आत्मा और मसीह के साथ एकता पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 15 है, पॉल, इफिसियों, फिलिप्पियों और कुलुस्सियों में मसीह के साथ एकता के लिए आधार।